अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय संस्कृति एवं युवा : एक अध्ययन

डॉ. अर्चना दुबे
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

भारतीय संस्कृति सच्चरित्र, सदाचार, सहृदया, अहिंसा, सत्य, न्याय, जैसे शाश्वत जीवन मूल्यों से समृद्ध संस्कृति है। परंतु वर्तमान मर युवा पीढ़ी इन सभी जीवन मूल्यों से सर्वथा विमुख होती दिखाई पड़ रही है। आज की पीढ़ी परोपकार, माता-पिता का सम्मान एवं मानव मात्र के प्रति प्रेम इत्यादि भारतीय सिद्धांतों आदर्शों से अनभिज्ञ है। यही कारण है की वह इनसे विमुख हो रही है और पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध से आकर्षित होकर नशा, पारिवारिक विघटन, उल-जुलूल फैशन इत्यादि से स्वयं को पतन की गर्त की ओर ले जा रहा है। आज जबकि सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत अपनी भौतिक उन्नति, आर्थिक उत्कर्ष एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के परिणामस्वरूप हो रही मानसिक अशान्ति, तनाव एवं अवसाद से ग्रस्त होने के बाद सच्चे सुख तथा शांति की खोज मे भारतीय वैदिक, योग की ओर अग्रसर हो रहे हैं। ऐसे मे हमारी युवा पीढ़ी का पाश्चात्य की ओर अंधानुकरण चिंता का विषय है। इससे पहले की ठोकर खाकर गिरें आवश्यकता है उनको सही मार्गदर्शन देने की| वर्तमान समय की आवश्यकता एक ऐसे सांस्कृतिक पुनर्जागरण की जो भारत के उत्कर्ष का जयघोष विश्व मे पुनः करेगा।

बीज शब्द

भारतीय संस्कृति, युवा, पाश्चात्य सभ्यता, अंधानुकरण

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं महानतम संस्कृति मे से एक है। भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं अहिंसा परमोंधर्मः, अतिथि देवो भव, सत्यमेव जयते, तेन त्यक्तेन भुंजी थाः इत्यादि सिद्धांत वाक्य है। भारतीय संस्कृति मे सदैव से ही 'स्वा' से पहले 'पर' को महत्व दिया

जाता है। भारतीय संस्कृति है जिसमें समाज कल्याण के लिए दधीचि ने हड्डियों का त्याग कर दिया, वहीं राजा शिवि के द्वारा शरणागत कबूतर की रक्षा हेतु अपना मांस काट देना, कर्ण के द्वारा अपना कवच कुंडल दान करना एवं राजा हरिश्चंद्र के द्वारा अपने वचन एवं कर्तव्य निर्वाहन हेतु सर्वस्य बलिदान करना इत्यादि अनगणित उदाहरण हैं जो भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के परिचायक हैं। परंतु आज की युवा पीढ़ी इन सभी से पूर्णतया अनभिज्ञ है। दुःखद एवं कटु सत्य यह है कि वह जानना भी नहीं चाहती उनके अनुसार इन दकियानुसी पुरानी बातों को जानने से क्या लाभ हमें आगे बढ़ना चाहिए न की 18वीं सदी में लौटना चाहिए। कुछ युवा भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ एवं महान मानते तो हैं लेकिन पश्चिम संस्कृति एवं सभ्यता ज्यादा आकर्षक है। भारतीय संस्कृति परंपरावादी एवं संकीर्ण विचार वाली है जबकि पश्चिमी सभ्यता अधिक उदार एवं खुलापन लिए है। यदि युवा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से विमुख हो रहा है तो इसमें दोष किसका है हम इस प्रकार से पतनकी गर्त में गिरने के लिए अभिशप्त नहीं हो सकते। हमें पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है, वर्तमान में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आवश्यकता है।

उद्देश्य

1- भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का युवा पीढ़ी पर प्रभाव का अध्ययन।
2- वर्तमान युवा पीढ़ी पर पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव का अध्ययन।
3- युवा पीढ़ी पर पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण से बचने के उपाय का अध्ययन।

परिकल्पना

1- वर्तमान युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति से विमुख हो रही है।
2- युवा पीढ़ी को पाश्चात्य चकाचौंध प्रभावित करती है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के लिए मुख्यतः द्वितीय के स्रोतों का प्रयोग किया गया है जिसमें इंटरनेट, मीडिया, सामाजिक पत्र-पत्रिकाएं एवं पूर्व में किए गए शोध इत्यादि का अध्ययन।

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्धि संस्कृति व सभ्यता मानी जाती है| यह विश्व की समस्त संस्कृतियों की जननी कही जाती है| संस्कृति किसी भी देश की जाति एवं समुदाय की आत्मा होती है जिससे समस्त संस्कारों का बोध होता है तथा संस्कृति ही आदर्श जीवन मूल्यों का निर्धारण करती है| संस्कृति का साधारण अर्थ- संस्कार, सुधार, परिष्कार,शुद्धि व सजावट इत्यादि होता है| संस्कृति शब्द का अंग्रेजी शब्द culture जो की Agriculture शब्द का एक अंश है जिसका अर्थ होता है कृषि जो कि एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बीज की तात्विक शक्तियों को विकसित किया जाता है| इसी प्रकार संस्कृति या कल्चर वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आत्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास होता है| अंग्रेजी में culture यानी संस्कृति के द्वारा आरंभ से लेकर अंत तक उन सभी छोटी व बड़ी वस्तुओं का समावेश किया जाता है जिससे चेतन प्राणी की बीज शक्ति के विकास में योगदान देती है| इसी प्रकार शारीरिक मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति का मूल तत्व है और भारतीय संस्कृति इस मूल तत्व की कसौटी पर खरी उतरती है।

भारतीय संस्कृति से युवाओं की विमुखता

भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ एवं महान है साथ ही परंपरावादी रीति रिवाज जो कि इसे और भी अधिक समृद्ध करते हैं। वहीं दूसरी ओर पश्चिमी सभ्यता संस्कृति का खुलापन, भौतिकवादी, मानसिकता भारतीय युवा को आकर्षित करती है। भारतीय सिद्धांतों, आदर्श और जीवन मूल्यों से मुक्त होने को तत्पर युवा इस समृद्ध संस्कृति से विमुख हो रहा है| युवावस्था के जोश में अपरिपक्व अवस्था में आज के संचार माध्यमों द्वारा पाश्चात्य की चकाचौंध एवं उच्च शृंखल संस्कृति से युवा का बचपाना संभव प्रतीत नहीं हो रहा है। युवा हमारे विद्वानों के सत्कार, सचरित्रता, सदाचार जैसी शाश्वत जीवन मूल्यों से वंचित हो रहा है।

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है भारतीय संस्कृति का वर्तमान स्वरूप ब्रिटिश समाज साम्राज्य की नीव के साथही प्रारंभ हो गया था| इस काल में जिस प्रकार से भारतीय संस्कृति को दबाने की चेष्टा की गई वह पुनः यथार्थ स्वरूप उभर नहीं सका। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव ने संयुक्त कुटुंब प्रथा के स्थान पर परिवारों का पृथक्करण प्रारंभ कर दिया| इसी प्रकार धर्मनिरपेक्षता ने भी धर्म को पीछे धकेल दिया। इस प्रकार विश्व की तत्कालीन उन्नत मानी जाने वाली पश्चात संस्कृति ने भारतीय जड़ों पर अपना प्रभाव डालना प्रारंभ कर दिया था। ब्रिटिश शासको द्वारा नए आर्थिक अवसरों के साथ ही शिक्षा का पश्चिमीकरण, ईसाई धर्म में धर्मांतरण किया। पश्चिमीकरण का यह प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षाकृत शहरी क्षेत्र में अधिक पड़ा। भारतीय समाज पर पश्चिम संस्कृति के परिणामस्वरुप पोशाक और खान-पान की आदतों में प्रभाव पड़ा। विवाह जो की एक संस्कार है पश्चिमीकरण के प्रभाव से इसे अनुबंध के रूप में माना जाना संस्कृति का हयस है। जन्मदिन में धार्मिक पूजा पाठ के दीप प्रज्वलित करने के स्थान पर केक काटने की संस्कृति और मोमबत्ती की रोशनी बुझाने की पश्चिमी परंपरा ने भारतीय जन जीवन मे अपना सशक्त स्थान बना लिया है। भारतीय साहित्य, कला, सिनेमा संगीत पर भी पाश्चात्य का प्रभाव पड़ा।

पश्चात संस्कृति के प्रभाव के कारण

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता इतनी प्राचीन है कि जब सारी सभ्यताएं अपने बर्बर जीवन व्यतीत कर रहीं थी उसे समय भारत में वेद ऋचाएं गूंजा करती थी। भारत में महिलाएं यज्ञ में बराबर से योगदान देती थी। हमारी भारतीय संस्कृति तभी पूर्ण रूप से परिष्कृत थी। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक ही नहीं आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से पूर्ण विकसित थी। परंतु जैसे ही पश्चिमी सभ्यता की औद्योगिक क्रांति ने बड़े-बड़े कारखानों और मशीनों से जो विकास किया उसने मानव का जीवन आसान बना दिया। पश्चिमी देशों के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास के साथ ब्रिटिश शासन ने भारत के लोगों को आर्थिक रूप से पिछड़ा अनुभव कराया जिससे भारतीयों के मन में औद्योगिक रूप से पश्चिमी सभ्यता से पिछड़े होने के कारण, पश्चिमी सभ्यता की औद्योगिक अच्छाइयों के साथ ही बुराइयों को, उनके तौर तरीके रीति-रिवाज को आंख मूंदकर

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

अपनाया जाने लगा। अंग्रेजी भाषा, विदेशी कपड़े, विदेशी खान-पान, रहन-सहन मान सम्मान का प्रतीक बन गए| अपनी सांस्कृतिक विरासत अपना स्वाभिमान खो दिया गया| ब्रिटिश शासन में लॉर्ड मैकाले द्वारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति विरासत को नष्ट करना था। मैंकाले के अनुसार संस्कृति नष्ट होने से भारतीयों को आसानी से अपने प्रभाव में लाया जा सकेगा। परिणामस्वरुप शिक्षा प्रणाली में पब्लिक स्कूल की संस्कृति का उदय होना, जिनके शिक्षकों के सोच विचार, आचार-विचार, बातचीत जो की पूर्ण रूप से पाश्चात्य रंग में डूबे काले अंग्रेज के रूप में विचरण करते देखे जा सकते हैं। आज भी शिक्षा प्रणाली इसी ढर्रे में चल रही है। आज शिक्षा मात्र नौकरी पाने का साधन बन गया है, युवा साक्षर तो बन जाता है धनार्जन भी करने लगता है परंतु ज्ञानवान, विवेकी, चिंतक एवं सहृदय विचारवान नहीं हो पाता जिसके परिणामस्वरूप आज युवा अपनी जड़ों से कट चुका है। संस्कृति, वेद, धर्म व ज्ञान के अभाव में माता-पिता, गुरुजन का सम्मान, मानवता आदि से उसका कोई सरोकार नहीं होता। युवा भारतीय सिद्धांतों आदर्श और जीवन मूल्यों से पूर्णता अनभिज्ञ है।

शिक्षा के अतिरिक्त वर्तमान के संचार साधन, इंटरनेट, सोशल मीडिया का विस्तार मन मस्तिष्क में कुंडली मारकर बैठा हुआ है जिसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस प्रकार के संचार माध्यम के द्वारा पाश्चात्य चकाचौंध से प्रभावित एक अनैतिक, उच्चश्रृंखल संस्कृति को भारतीय समाज के समक्ष परोसा जा रहा है जो कि हिंसा, अश्लीलता एवं अभद्रता से सराबोर है। आज बालक बचपन से ही इन्ही सब को देखकर द्वेष, हिंसा, अनैतिकता एवं चरित्रहीनता के संस्कार ग्रहण कर रहा है| अपने आसपास के वातावरण के प्रभाव के कारण सुचारित्रता, सदाचार, मानवता, आतिथ्य एवं विद्वानों का सत्कार इत्यादि शाश्वत जीवन मूल्यों से वंचित हो रहा है। वे भारतीय सांस्कृतिक विरासत से भी विमुख होते दिख रहे हैं। पश्चात संस्कृति के अंधानुकरण के कारण भारतीय सांस्कृतिक विरासत से विमुख होते जा रहे हैं।

पश्चात सभ्यता से के अंधानुकरण से बचाव के उपाय

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय संस्कृति के मानवीयता, सचित्रता, सदाचार जैसी शाश्वत जीवन मूल्यों से रहित होता युवा पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के अंधानुकरण में तल्लीन है। इस समस्या का समाधान नहीं निकल गया तो हमारी आने वाली पीढ़ी गर्त में गिरने के लिए तत्पर है। परिवर्तन पहले भी संभव था और आज भी परिवर्तन हो सकता है आवश्यकता इस बात की है कि हमें बच्चों के सम्मुख इस प्रकार के आदर्श प्रस्तुत करने होंगे जिससे वे बचपन से ही अपना सकें। आदर्श एवं संस्कार इस प्रकार के हों कि दृढ़ता से उनके आचरण में बनी रहे। इसके लिए सर्वप्रथम माता-पिता को ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की वास्तविकता महानता एवं गौरव का ज्ञान होना चाहिए। इस प्रकार का सामूहिक प्रयास प्रत्येक व्यक्ति द्वारा निजी तौर से शुरू कर सकता है। दूसरी ओर शिक्षा की बात करते हैं तो बच्चों को जो सामग्री, साहित्य हम लिखेंगे छापेंगे व प्रदान करेंगे वह वही पढ़ेगा एवं इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध कराएंगे वहीवह व्यवहार एवं आचरण में लेगा। प्राचीन महापुरुषों, राष्ट्र भक्तों, पौराणिक आदर्श की कहानी वर्तमान संदर्भ में डालकर बच्चों व युवाओं को उपलब्ध कराई जाए जिससे उन्हे नैतिक शिक्षा, उदात्त भावनाएं एवं जीवन मूल्यों की प्राप्ति होगी। इस प्रकार के साधन कठिन एवं श्रम साध्य तो हो सकते हैं परंतु असंभव नहीं है। अतः इस प्रकार से युवा पीढ़ी को बचपन से ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति युक्त संस्कार देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भारत का गौरवशाली इतिहास, सांस्कृतिक वैभव और हमारी समृद्ध संस्कृति जिस प्रकार से अपना सार खो रही है उससे तो यही प्रतीत हो रहा है कि हम अपनी वास्तविक पहचान ही खो रहे हैं। आज युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति एवं गौरव से विमुख हो रही है और पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण कर रही है| भारतीय धार्मिक आस्था एवं समर्पण की भावना पर प्रश्न उठाना, पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत को पिछड़ापन समझना जो की न सिर्फ आध्यात्मिक बल्कि व्यक्ति को मानसिक बल प्रदान करती है। किसी भी सभ्यता का अंधानुकरण संस्कृति एवं मानसिक दासत्व है, जिससे युवा को मुक्त कराना अति आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली पेशेवर कौशल और बौद्धिक विकास करने पर तो ध्यान केंद्रित का रही है परंतु सर्वांगीण विकास

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

की ओर भी ध्यान देना चाहिए| इसके लिए बच्चों को भारत की समृद्ध सामाजिक विरासत, उत्कृष्ट गाथाओं का ज्ञान एवं मूल्य आधारित कहानियों के माध्यम से नैतिक विकास की आवश्यकता है। जिससे बचपन से ही भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था और धार्मिक मूल्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी व भौतिकता से बाहर निकल कर अपने पारंपरिक धर्म एवं संस्कृति के प्रति गहरी आस्था रख सकेंगे। इस प्रकार भारतीय संस्कृति को नया जीवन मिलेगा एवं युवा पीढ़ी को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने मे मदद मिलेगी।

संदर्भ सूची

1. https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/know-your-rights/influence-of-western-culture-on-indian-society
2. https://www.divyayug.com/index
3. https://www.youthkiawaaz.com/2021/03/our-culture-is-becoming-extinct-in-the-blinding-of-western-civilization-hindi-article/
4. https://www.patrika.com./is-the-youth-moving-away-from-indian-culture

SKU SHODH शोध संचार SANCHAR